E-Journal
January to March 2017
U.G.C. Journal No. 64728

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 4.710 (2016)

Naveen Shodh Sansar

(An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
(U.G.C. Approved Journal)

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", **795, Vikas** Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, **(INDIA)**
Mob. 09617239102, **Email** : nssresearchjournal@gmail.com, **Website** www.nssresearchjournal.com

अनुक्रमणिका/Index

01. अनुक्रमणिका/Index 02

02. क्षेत्रीय सम्पादक मण्डल/सम्पादकीय सलाहकार मण्डल/ निर्णायक मण्डल 13/14/15

03. आम और खास के जनजातीय सन्त बौंदरू (डॉ. मधुसूदन चौबे) 17

04. ग्राम सिकारा जिला-सिवनी का आर्थिक-सामाजिक अध्ययन (डॉ. राजेश वामखुंवर) 19

05. परचरीकार सन्त खेमदास - एक अध्ययन (डॉ. मधुसूदन चौबे) 21

06. कृष्ण भक्त सन्त लालदास - जीवन एवं शिक्षाएँ (डॉ. मधुसूदन चौबे) 23

07. समाजिक विद्रूपताओं का महाग्रंथ - रागदबारी (डॉ. वारिश जैन) 25

08. गाथाकार सन्त धनजीदास और उनका योगदान (डॉ. मधुसूदन चौबे) 27

09. Manufacturing Of Yarn From Some Natural Fibres Of Himalayan Origin And Their Blends 29
(Sambaditya Raj, Prof. Himadri Ghosh, Dr. Prabir Kumar Choudhuri)

10. भारतेंदुकालीन हिंदी नवजागरण का समीक्षात्मक अध्ययन (सोनिया राठी) 32

11. Enhancing Beauty of Khadi for Apparel through Clamp Dyeing 37
(Meghshyam Gurjar, Prof. Himadri Ghosh)

12. बालश्रमिकों की स्थिति एवं इनके हित के लिये किये जा रहे प्रयासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन 40
(सागर जिले के संदर्भ में) (सीमा सिंह, डॉ. शैलजा दुबे)

13. मध्यप्रदेश राज्य सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास बैंक के वित्तीय विवरणों का विश्लेषण (डॉ. निधि वाडेकर)... 43

14. ग्रामीण विकास में उत्पन्न समस्याओं का समग्र अध्ययन (डॉ. सावित्री पाटीदार) 45

15. बैगा जनजाति में सामाजिक परम्परा (सीमा सिंह, डॉ. शैलजा दुबे) 47

16. मध्यप्रदेश राज्य सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास मर्यादित बैंकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (डॉ. निधि वाडेकर) . 49

17. ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में पंचायतों का योगदान (डॉ. सावित्री पाटीदार) 51

18. मध्य प्रदेश के प्रमुख चित्रित शैलाश्रय (डॉ. उमा त्रिपाठी) 54

19. रामचरित मानस में वर्णित मानव मूल्यों के प्रसंगो का अध्ययन (डॉ. रामरतन साहू, रंगनाथ यादव, श्रीमती मंजू साहू) 57

20. विज्ञापन कला की उपयोगिता एवं महत्वता- एक समीक्षात्मक अध्ययन (डॉ. ऋषिका शर्मा) 60

21. रायगढ़ जिले में स्वाधीनता की लड़ाई (डॉ. रामरतन साहू) 64

22. Scholastic Achievement In Relation To Self Concept of B.Ed. Student Teachers of Mandsaur 67
& Neemuch District (Dr. Nisha Maharana, Yogita Somani)

23. मानवता एवं शौर्य के प्रतीक छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद वीर नारायण सिंह (बिंझवार जनजातीय के विशेष संदर्भ में) (मंजू साहू) . 70

24. उत्तररामचरितम् में जीवविज्ञान (डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, रीना देवांगन) 72

25. Study on Hi-Tech Vegetables Production Trends and Potential Market for Excel Crop Care Ltd. 77
(Tarannum Hussain, Shahbaaz Sheikh)

26. लोक कल्याणकारी राज्य में ईसाई मिशनरियो की भूमिका (छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में) 84
(डॉ. संध्या जायसवाल, पूर्णिमा मानिकपुरी)

27. History of Female Procession Artist from Sir J.J.School of Art (Douglas M. John, Dr. Pushpa Dullar) 86

28. विक्रमोर्वशीयम् में जीव विज्ञान (डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, रागनी कश्यप) 91

29. Procession paintings of Mumbai and the Innovation of Revival Art (Douglas M. John) 95

30. Application of Dabu Mud resist Printing and Indigo Dye on Khadi Fashion Accessories 100
(Meghshyam Gurjar, Prof. Himadri Ghosh)

31. Innovation in traditional Namda Handicraft (Sharmila Gurjar, Prof. Himadri Ghosh) 104

32. Comparsion Of Leg Strength Among Throwers And Jumpers In Athletics 108
(Talvinder Singh Aoulak,Jai Shankar yadav)

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal) (U.G.C. Jr. No. 64728)
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 4.710 (2016) January to March 2017, E - Journal

मानवता एवं शौर्य के प्रतीक छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद वीर नारायण सिंह (बिंझवार जनजातीय के विशेष संदर्भ में)

मंजू साहू*

प्रस्तावना – देश के अधिकांश भागों की तरह छत्तीसगढ़ भी 1857 ई. के विद्रोह की घटना से प्रभावित हुआ तथा यहां भी सिपाहियों के विद्रोह के अतिरिक्त सोनाखान की घटना भी हुई। जब 1854 ई. में छत्तीसगढ़ का क्षेत्र ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बन गया। तब यहां किसी विद्रोह की सूचना नहीं मिली, पर बाद में ब्रिटिश अधिकारियों की गलत नीतियों के कारण यह शांतिमय क्षेत्र भी आंदोलित हो उठा। उत्तर भारत में विप्लव फैलने के साथ ही छत्तीसगढ़ में भी विद्रोह की आग की लपटें पहुंची। यहां का विद्रोह संगठित रहा हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। यही कारण है कि इस घटना (1857 का विद्रोह) से रायपुर शहर ही प्रभावित हुआ। दूरस्थ क्षेत्रों में इसका प्रभाव दिखाई नहीं पड़ा। वास्तव में यहां की घटना के लिए प्रशासन का गैर जिम्मेदाराना व्यवहार ही उत्तरदायी था। रायपुर में अशांति ने अतिरिक्त सहायता की मांग की फलस्वरूप सेना की अतिरिक्त टुकड़ी रायपुर भेज दी गयी। ऐसे ही समय में छत्तीसगढ़ का एक आदिवासी 'वीर' था– 'नारायण सिंह'। इनको 10 दिसम्बर 1857 ई. को फांसी दे दी गई। जिस चौक पर उन्हें फांसी दी गई वह आज जय स्तंभ चौक के नाम से प्रसिद्ध है।

वीर नारायण सिंह का परिचय – सत्रहवीं सदी में सोनाखान राज्य की स्थापना की गई थी। इनके पूर्वज सारंगढ़ के जमींदार के वंशज थे। सोनाखान का प्राचीन नाम सिंघगढ़ था। कुर्रूपाट डोंगरी में युवराज नारायण सिंह के वीरगाथा का जिंदा इतिहास दफन है। वीर नारायण सिंह का जन्म सन् 1795 में रायपुर जिले के बलौदाबाजार तहसील के सोनाखान नामक स्थान में हुआ था। सोनाखान के जमींदार बिंझवार जाति के थे। यह जमींदारी क्षेत्र कलचुरियों की बिलासपुर शाखा के अंतर्गत आती थी, किन्तु वर्तमान में यह रायपुर जिले में आती है। 1855 ई. में अंग्रेजी शासन के आरंभ के समय यहां के जमींदार वीर नारायण सिंह थे जो जमींदार रामराजे के पौत्र तथा जमींदार रामराय के पुत्र थे। वीर नारायण सिंह जी ने 35 वर्ष की आयु में अपने पिता रामराय की मृत्यु के बाद 1830 ई. में जमींदारी का कार्यभार ग्रहण किया। सन् 1854 ई. में अंग्रेजी राज्य में विलय का विरोध करने के बाद रायपुर के डिप्टी कमिश्नर इलियट सेटक राव बन गया।

वीर नारायण सिंह की वीरगाथा – कुर्रूपाट डोंगरी में युवराज नारायण सिंह के वीरगाथा का जिंदा इतिहास दफन है। युवराज नारायण सिंह के पास एक घोड़ा था, जो कि स्वामी भक्त था। वे घोड़े पर सवार होकर अपने रियासत का भ्रमण किया करते थे। भ्रमण के दौरान एक बार युवराज को किसी व्यक्ति ने जानकारी दी कि सोनाखान क्षेत्र में एक नरभक्षी शेर कुछ दिनों से आतंक मचा रहा है जिसके चलते प्रजा भयभीत है। प्रजा की सेवा करने में तत्पर नारायण सिंह ने तत्काल तलवार हांथ में लिए नरभक्षी शेर की ओर दौड़ पड़े और कुछ ही पल में शेर को ढेर कर दिए। इस प्रकार वीर नारायण सिंह ने शेर का काम तमाम कर भयभीत प्रजा को निःशंक बनाया। उनकी इस बहादुरी से प्रभावित होकर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें वीर की पदवी से सम्मानित किया। इस सम्मान के बाद से युवराज वीर नारायण सिंह के नाम से प्रसिद्ध हुए।

वीर नारायण सिंह तथा स्वतंत्रता आंदोलन– वीर नारायण सिंह जनहितकारी कार्यों में रूचि रखते थे। इसलिए वे अपनी प्रजा में लोकप्रिय हो गए। दुर्भाग्यवश 1856 ई. में इस क्षेत्र में भीषण अकाल पड़ा। लोग भूखों मरने लगे। लोगों की जान की रक्षा के लिए उन्होंने कसडोल के एक व्यापारी माखन सिंह के गोदाम का अनाज (अगस्त 1856 ई. में) उठाकर अपनी भूखी जनता जो भीषण अकाल के कारण दाने–दाने के लिए तरस रही थी, उनमें बांट किया। इस घटना की शिकायत उस समय डिप्टी कमिश्नर इलियट से की गई। वीर नारायण सिंह को जैसे ही शिकायत की भनक लगी, उन्होंने कुर्रूपाट डोंगरी को अपना आश्रय बना लिया। ज्ञातव्य है कि कुर्रूपाट गोड़, बिंझवार राजाओं के देवता हैं। अंततः ब्रिटिश सरकार ने देवरी के जमींदार जो नारायण सिंह के बहनोई थे के सहयोग से छलपूर्वक देशद्रोही व लुटेरा का बेबुनियाद आरोप लगाकर उन्हें बंदी बना लिया। उनको रायपुर के जेल में डाल दिया गया। इसी समय अंग्रेजों के विरूद्ध 1857 ई. को विद्रोह आरंभ हो गया। विद्रोह की अग्नि रायपुर की सेना में भी धधक रही थी। पूरे दस माह चार दिन जेल में रहने के बाद वीर नारायण सिंह 20 अगस्त 1857 ई. को रायपुर जेल से भाग निकले। ऐसा कहा जाता है कि वीर नारायण सिंह रायपुर स्थित सेना के सहयोग से भाग निकलने में सफल हुए थे।

वीर नारायण सिंह की सेना – जेल से फरार होने के पश्चात श्री वीर नारायण सिंह सोनाखान पहुंचे और उन्होंने तुरंत 500 सैनिकों की एक सेना बनाई। इन सैनिकों को महज मजबूत संगठन और कुशल नेतृत्व की जरूरत थी। यह खबर जब रायपुर के डिप्टी कमिश्नर स्मिथ के पास पहुंची तो डर के कारण उसकी हालत खराब हो गयी। स्मिथ ने वीर नारायण सिंह के खिलाफ सैनिक तैयारी आरंभ कर दी। लगभग 21 दिन इस तैयारी में लग गए। 20 नवम्बर 1857 ई. को सुबह अंग्रेजों की सेना सोनाखान के लिए चल पड़ी। यह सेना पहले खरौद पहुंची, यहां पुलिस थाना था। डिप्टी कमिश्नर स्मिथ इतना सहम गया था कि वहां पहुंचते ही उसने कटगी, भटगांव, बिलाईगढ़ और देवरी के जमींदारों को उसने सहायता के लिए बुला भेजा। 26 नवम्बर को स्मिथ को नारायण सिंह का एक पत्र मिला जिसे स्मिथ ने पास बैठे एक जमींदार को पढ़वाया। पढ़ते ही स्मिथ गुस्से से आग बबूला हो उठा। 28 नवम्बर तक स्मिथ तैयारी करता रहा। 29 नवम्बर के दिन सुबह होते ही स्मिथ की फौज सोनाखान के लिए रवाना हो गई। स्मिथ इतना भयभीत था कि उसने रायपुर से जो सैनिक बुलवाए थे उनकी संख्या 50 थी

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) डॉ सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

तथा वे सभी अंग्रेज थे।

वीर नारायण सिंह को फांसी की सजा – अंग्रेजों की सेना में 80 बेलदार थे जो भारतीय थे। इन 80 बेलदारों को जब पता चला कि उन्हें सोनाखान के जमींदार पर आक्रमण करना है, तब 30 बेलदार इस लक्ष्य से हट गए। युद्ध के दौरान दोनों तरफ से गोलियां चलीं, किंतु थोड़ी ही देर में वीर नारायण सिंह की सेना की, गोलियां खत्म हो गयी तथा वीर नारायण सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। वीर नारायण सिंह पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया तथा अंग्रेज न्यायाधीश ने इनको मृत्युदण्ड की सजा सुनाई। 10 दिसम्बर 1857 को वीर नारायण सिंह जी को रायपुर नगर के स्थित चौक में फांसी की सजा देकर प्राण दण्ड दिया गया।

वीरनारायण सिंह को रायपुर में फांसी देने के पश्चात् उनके शव को तोप से उड़ा दिया गया। इस प्रकार से भारत माता के सच्चे सुपुत्र देशभक्त की जीवन लीला समाप्त हो गई। छत्तीसगढ़ के शेर कहे जाने वाले अमर शहीद वीरनारायण सिंह को राज्य का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कहा जाता है। रायपुर में इस अमर शहीद की स्मृति को चिर-स्थायी बनाने के लिए इस चौक का नाम जय स्तंभ चौक रखा गया।

इनके सम्मान में छत्तीसगढ़ शासन के आदिम जाति कल्याण विभाग ने उनकी स्मृति में पुरस्कार की स्थापना की है, इसके तहत राज्य के अनुसूचित जनजातियों में सामाजिक चेतना जागृत करने तथा उत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों तथा स्वैच्छिक संस्थाओं को दो लाख रूपये की नगद राशि व प्रशस्ति पत्र देने का प्रावधान है।

उपसंहार – इस प्रकार देश के स्वाधीनता आंदोलन में छत्तीसगढ़ का यह प्रथम, स्वतंत्रता सेनानी शहीद हो गया। जय स्तंभ चौक आज भी वीर नारायण सिंह का यशगान करते हुए स्थित है। वीर नारायण सिंह के विषय में हम कह सकते हैं कि वीर नारायण सिंह में मानवता शौर्य की प्रतीक साहस एवं उत्साह कुट-कुट कर भरी थी। वीर नारायण सिंह जी ने अपने जीवन के अंतिम पल तक अपने देश के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान कर दिया। इस तरह से उन्होंने आदिवासी जनजातीय के लिए स्वर्णिम इतिहास लिख दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. गुप्ता, मदनलाल- छत्तीसगढ़ विग्दर्शन।
2. यदु, हेमू- छत्तीसगढ़ की अस्मिता।
3. शुक्ल, सुरेश चन्द्र – छत्तीसगढ़ का इतिहास।
4. वर्मा, भगवान सिंह- छत्तीसगढ़ दर्शन।
5. देव, अभयप्रताप- छत्तीसगढ़ के सामंती इलाकों में जनजागृति।
6. शर्मा, अरविंद- छत्तीसगढ़ का राजनैतिक इतिहास।
7. त्रिपाठी, संजय- छत्तीसगढ़ वृहद संदर्भ।

****